CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MHDF

074

વરમ હોલકૃમીવ્રતમ

Script: N. Nageri

Material: P.

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

श्रीगणेशायनमः श्रीरामायनमोनमः

स्नीमितपथोनिधिनिके तनवन्दुपाणोतौ णीं ऋोागपीणा

नाक्षितपुंणाम्पुतेयोणीरारारवतेरानंणामत्तवाकु

वोतलस्नीनवस्निंदवामेंपिदि कनावलंवंः ५ १

स्नी[illegible]नस्नीरानतानंनमोलखनायनताः ५ १

[illegible]

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

स्नीव्र तमस्तु॥ ॥वन्नमरूालस्मीव्रत॥ ॥प्रान्तः॥
पवं॰ष्णाविवोवणाविवोज्ञायां॰रातति घोवनलस्मीवृ दि-
वप्रवलस्मीप्रीतय घं॰प अपुनाणाक्र प्रकानेताकलोक्रपना-
नाअकाऊनादिकोउरोपवानपु ञां॰कणे॥ तद॰णत्वेनकल
रार्वनं॰वां॰स्सार्वनं॰कत्वा॥ ॥णणापतिपुञां॰कत्वा॥आ॥ उअ
मात्मनेनमः॥ अं॰तनात्मनेनमः॥ परमात्मनेनमः॥ सोप
मितित्तावचेतु॥ ॥अथ अं॰हपन्यानं॰॥ ॥उद्धतोकल
ती[illegible]नेननविंतं॰तुं॰गां॰मनं॰नस्पचलं॰प्र घरपपीहिकत्ति
त्तिकाविनविंतेःस्तं॰ते रवदेभैं॰रातैः॥ वानेरवअनननननाकरप
वितेः॥ रोत्तावदे अं॰हपेःस्तत्वाचे·नतिरां॰सपअपुवलेः॥ प्र
त्ताभिकेःस्वस्तिकेःअक्षाकालविलं॰ब अं॰हपउतेवक्रे रवसो
पानकेनीनानन विंतुखितेरवकअलेनत्मं॰तरोत्तावदेः॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

मातिको क्लरीपदीप्ते विलसल्लक्ष्मी विलासास्पदं ध्यायो
म्मं हृदयमध्ये भवसकलैः स्तैवं विधिंस्थापकः॥ ॥अथ वास्तुं
हृदयध्यानं कृत्वा॥ ॥ध्यात्वा मं हृदयाय नमः॥ वास्तुपुरुषाय
नमः॥ निवृत्तिकलाद्वाराय॥ विमलायै॥ ब्रह्मणे॥ दक्षिणा
स्त्रायनं दिनो॥ वाम रात्रस्य अरकालो॥ अघोरनायेव
न... पतिदक्षिणात्तानेनापतये॥ वामतानेस्वरवक्त्रै॥ न
यो मध्यात्तानेमोधै॥ देवस्य॰ वास्तुपुरुषाय॥ श्रीमद्दाल-
क्ष्मै॥ इति मं हृदयपुजामध्यपदयाजि॥ ॥अथ द्वारपालक
पुजां कुर्यात्॥ ॥पूर्वद्वारे द्वारश्रीयै॥ ब्रां॰ स्मै॥ अदस्व-
यै॥ दक्षिणद्वारे द्वारश्रियै॥ कोणायै॥ वामायै॥ पश्चिमद्वारे
द्वारश्रियै॥ सर्वमंगलायै। सर्वमंगलायै॥ ह्रुं॰ ज्ञानेप॥ उत्तरद्वा
रे द्वारश्रियै॥ सिद्ध्यै॥ बुद्ध्यै॥ ज्ञानध्यै॥ ॥श्री अदालक्ष्मै नम
द्वारपालपुजामध्यपदयाजि॥ ॥अथ पीठपुजां कुर्या

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

तृ। ।ॐ अं० अनु कारय। कं० कास्यै। कं० कास्वे कौ। अथो अ
थानरा क्रौ। अनं० तावे। आन्ने आदि पी ठत्ता गे ॐ ३०३ गीयै॥ नं०
ग[illegible]वतये॥ नं० तेल पालाचना॥ वा० वास्तु ॐ वाया॥ सं० सन
क्वतो॥ पश्री क। वपित्र वाच॥ नकै वताविं॥ सानांयत्सिं० सुकाया
सात्वविताया॥ पश्रीयु। वेना भीय॥ नक्वच्चीयाय॥ अथ सीयाय॥ अ
कानाया॥ अवे नां गायाय॥ वनेक्ष वींवा। अथो सं० सवसा॥ सं० न
क्वे। तं० तनसे॥ पं० पनशाखने। नतु वनिजेल्साध्वो ॐ वनं० ता
[illegible]लाया। कं० दाया॥ जाको रा। चदेतैयौ॥ बीकेत्यौ। केसीतेसौ॥
सुका मिं० लाया॥ सुवर्ण मं० ३ ला पित्रतये ॐ स्वातो॥ द्विति
त्का ग्रे ॐ त० स्तो मसं० ३ लायसो मसं० ३ ला पित्रतये विद्वे ५
सं० वह्निसं० ३ लायवह्निसं० ३ ला पित्रतये नुवाया॥ द्वितिका यां
सा० वाह्निसं० ३ लायवह्निसं० ३ ला पित्रतये विवाया॥ अथो सी

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

कालस्यै॥ रतिकर्णिकायै॥ कन्येतु॥ कामायै॥ कौमार्यै॥ कैशोर्यै
कामायै॥ कलविकर्णिकायै॥ कलत्रजविक्षायै॥ सर्वतुन॰
मनायै॥ मनोमनायै॥ इति नवदात्रिंशत्कं कुण्डलिन्यः॥ ॥आदिमा
तिनव प्रदेवतास्तोत्र नमः॥ द्वं॰ कादिलोकापालेत्तेभ्यः॥ ॐ नमो
तणवति सकलत्रतात्र्यमाये योगपीठाधिकायै नमः॥ इति
[illegible] क्षां॰ कलिंग्मातृः॥ ॥नवग्रहतान्तः॥ ॥ॐ नी
तां॰ सवकुणदावताः पनेविंशत्कं॰ विनिजमवेविव॰देदिस्वं
सिद्धिरत्नाधिनिकोहि कोहिं सं॰ कादां॰ सवतिनतनु षितां॰ नी
तां॰ वयन॰ योगेनसाकं॰ वलतु षितां॰॥ ॥नीवनमकालस्यै
नमः॥ ॥यमानं॥ ॥नतः स्तुतं॰ सतिशापवा॥ ॥वनमात
चपानाकमवोतजानवतुर्कैयन साम्॰ वनयनेदेविकभलास
नसं॰ स्नियते॥ नं॰ मवकां॰ दविनां॰ जातवेदो वमावज॥ ॥
जावादनं॥ ॥कनकं॰ जकुलनवतण नगादुलविनाजिते॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

गकस्कं०पक्षियते दे वि लै वैव्व श्री स दाये नि।।का० भावद जात
वेदांग ।।पुत्र वानद०।। ।।आत्मन०।। ।।पकृतानाद्दिनः
कोली किनीह मकु हानिनिः।।वैना क्षिता० त्रि क० कातञ्जनलेक
मलालचे।। अवदवृत्तान्निवक्षणा०।। ।।देवीकृवता०।। ।।
यो०।। ।।कादतं०वृत्तिनावलिपन०न०।। कालाः०।। किन०।।
नृ०।। [illegible] ।।का० श्रोक्षिताद्दि
नाम।। ।।वकुपेक्षि०।। ।।कार्णि०।। ।।विघ्रापनेमका
नी० का विवी० लोकनात्याकिन ताम्रवलन० दे विलवेद्व
निनभोलकृते।।ल० श्रा० श्रनावपा० जवलास०।। ।।का० वहो।।०
क्षावलन०।। ।।पद्योदधिकलो पेत० नाकवाकुक्षि
त०।।व०वाभतं० क्षानविद० गुणानकलालचो।। ।।का
च कवा वृत्तकिलि।। ।।प०वाटंजक्षान०।। ।।ग०गानिलिवती
वेत्तिः श्रानीत० ल०क नो कवं०।। कानापि० नला०दे कित

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

सातीक्ष्णप्रदोतवाञ्छापोचिद्धोलिद्रचोरकस्थानं॥ ॥तनत्र
भीकरवहृत्तदितोनवचोपद्मेक्विपारकमलपानीयेजान
कं॰रजनोनचे॥ आदिसवतीतपक्षोपिकातो॥ ॥काचमा
लखीः॥ ॥वक्षनक्षम्॰॥ ॥नानावनप्रदेहविनान
ज्ञातविवर्धिनि।नानावं॰ठलसं॰बुलिमातेपालितक्षत्रवेप-
[illegible] आं॰रेवसलाः॥ ॥कीर्तिवेधिं॰रजतत्रयो॥ ॥कुपवी-
तं॰॥ ॥वं॰कनीलमलिजोतिः॥ वं॰कपं॰विल्वतीतिनाविरु
हं॰दोदवल्लिविनानितपुष्पलिपासाजलां॰अमृतं॰॥ ॥को
नज्ञातु॥ ॥मातनणं॥ ॥कल्हारं॰कुमुदसौधकोकनदविरु॰
रवेः॥ ॥लितचं॰कलमकं॰मेवदन्॰देविनक्षत्रतां॰॥नं॰घनानां॥
लिकां॰॥ ॥नं॰पान्तु॥ ॥पद्मावतीपद्मपद्मकंपद्मस्थोपद्माल
यनै॥ पद्मनाभवैश्यपद्मसंभवकनकोत्थनि॥ जनमः॥का
नं॰॥ ॥पद्मचाः॥ ॥जस्तातानु॥ ॥जातीवं॰वकपुं॰ज्ञानं
केतकीकेसरनालिन॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

द्वंद्विनी ग्रंथिता॥ कं॰ दाअं॰ द्वानकुब्जा निमिते॥ कर्कियितानु जातुनाथ-
मालिनी॥ पुष्कवातिय ॥ पद्मसद्विरेनामेन दोलवाचनं॥
असा॰ नपुका॰ कुनिग्रे॥ पद्मसाये॥ दारो॥ कमला॰ चे॥ तस्यै
सकललोकजननै॥ कं॰ छे॥ म॰ नं॰ बाये॥ जानकी॥ नमाये॥ कु॰
विक्षुवल्लताये॥ कृहिं॥ निरस्मानाटै॥ नातिं॥ क॰ दिनाये॥ कदुस्यं॰ एक
तानक्षकोदये॥ विकुलुनूं॥ कं॰ जे॰ के॰ लिग्ने॥ कं॰ ठं॥ विशेव्र दनाये॥
कुं सं॥ कमलास्ये॥ वि॥ सीनिलाचन कं॰ माकाये॥ लला हं॥ विंस्ये॥
[illegible] न अपाल स्ये॥ स ह॰ नं॰ भुक भासे॥ मन्वे प्र॰ विंदु का॰ कन
ये॥ ॥ ऊनन पाल स्मै॥ त्रपलग्र विं॥ सर्वोप्ये॥ द्वितीय प्र॰
चिं॥ ललिताये॥ तृतीय प्र॰ विं॥ त्रिलोकाये॥ चतुर्थप्र॰ विं॰ एक
ये॥ पं॰ चलप्र॰ चिं॥ उमाये॥ षष्ठ प्र॰ विं॥ कमलाये॥ सप्तम
प्र॰ विं॥ लोकमाता॥ अष्टम प्र॰ विं॥ सर्वमंगलाये॥ नवम
प्र॰ विं॥ ॥ दशमप्र॰ विंदु का॰ हालस्वसाकिं॥ ॥ अथ वात

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

पुजां करिष्ये॥ ॥ श्रीवनअदालस्मै॥ बिल्वपत्रं॥ कोमा
र्यै॥ तुलसीपत्रं॥ विष्णुवल्लभायै॥ निर्गुंडीपत्रं॥ कं॰ बनीका
यै॥ जं॰ बीनपत्रं॥ वीतरागायै॥ जामलकपत्रं॥ शिवायै
धुनपत्रं॥ सिद्धिदायै॥ विष्णुक्रांतीपत्रं॥ जायायै॥ जाती
पत्रं॥ लोकमातै॥ मरुसीपत्रं॥ श्रीअदालस्मैनमः॥ पत्रपू
[illegible]जातिलाजर्पयामि॥ ॥ अथ पुष्पपुजां करिष्ये॥ ॥
[illegible]वनअदालस्मै॥ जं॰ दानपुष्पं॥ लानस्वतो॥ सेवं॰ तिकापु
वेष्णवै॥ मल्लिकापु॥ त्रं॰ स्वरक्षयानितपे॥ जातिपु॥ रुल
पायै॥ रं॰ पकापु॥ कामिनो॥ सुगं॰ धिपु॥ सातो॥ कनवी
रपु॥ लोकमाते॥ पद्मपु॥ स्थितिस्थितं॰ तकारिण्यै॥ के
तकीपुष्पं॥ ॥ श्रीवनअदालस्मैनमः॥ नानाविधपुष्पाणि
समर्पयामि॥ ॥ अथ धूपं पुजां करिष्ये॥ ॥ श्री
उ८ विनेशनमः॥ धूपं॥ पद्मालयायै॥ दीपं॥ पद्माक्षै॥ नं॰ वेद्यं
सं॰ तवाच्ये॥ ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

प्रमाल्लनायै ॥५॥ नाकीवलोवनायै ॥६॥ नद्यै ॥७॥ देव्यै ॥८॥ वनदायै ॥९
का जन्तुवित्यै ॥१०॥ अजाजायायै ॥११॥ अजापातकनाशिन्यै ॥१२॥
अजासत्यायै ॥१३॥ जालिन्यै ॥१४॥ तत्रायै ॥१५॥ दिव्यांगायै ॥१६॥
स्तवंदितायै ॥१७॥ प्रज्ञाविद्यायै ॥१८॥ विनतायै ॥१९॥ विमलायै
॥१०॥ पवनायै ॥११॥ पावित्र्यै ॥१२॥ कान्त्यै ॥१३॥ विद्युन्मालिन्यै ॥१४॥
विलासिन्यै ॥१५॥ चंडिकायै ॥१६॥ चंद्रनायै ॥१७॥ चंद्रलेखायै ॥
॥१८॥ वितावित्यै ॥१९॥ सवित्र्यै ॥२०॥ जनसायै ॥२१॥ विद्यायै ॥२२
कीर्त्यै ॥२३॥ दृष्ट्यै ॥२४॥ अजाजायायै ॥२५॥ जनतोनायै ॥२६॥ ज
नबलायै ॥२७॥ देव्यै ॥२८॥ वस्तुपायै ॥२९॥ तीव्रायै ॥३०॥ तोयद
ायै ॥३१॥ सत्यवादिन्यै ॥३२॥ गोप्यै ॥३३॥ गोनावन्यै ॥३४॥ गं
गायै ॥३५॥ गोजत्यै ॥३६॥ वंशवालिन्यै ॥३७॥ कदिलायै ॥३८
चंडिकायै ॥३९॥ नानायायै ॥४०॥ नत्यै ॥४१॥ वाजायै ॥४२॥ तन्मा
नकायै ॥४३॥ विद्यापनायै ॥४४॥ दीपावतायै ॥४५॥ कावेर्यै ॥४६

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

स्वतन्त्रायै ॥६२॥ सर्वज्ञायै ॥६३॥ सद्गतिदायै ॥६४॥ श्री अनुपमायै ॥६५॥
कालकायै ॥६६॥ कामनायै ॥६७॥ तुष्ट्यै ॥६८॥ पुष्ट्यै ॥६९॥ स्वस्त्यै ॥७०॥
स्वयम्भुवे ॥७१॥ शिवायै ॥७२॥ शांभव्यै ॥७३॥ जौवन्यै ॥७४॥ नन्दालि-
न्यै ॥७५॥ ब्राह्म्यै ॥७६॥ वैष्णव्यै ॥७७॥ लोकपालिन्यै ॥७८॥ गोपालि-
न्यै ॥७९॥ कृपायै ॥८०॥ तन्द्रायै ॥८१॥ निद्रायै ॥८२॥ नन्दवत्यै ॥८३॥ कु-
[illegible]नायै ॥८४॥ सनातनकायै ॥८५॥ आपदायै ॥८६॥ भयनाशायै ॥८७॥
[illegible]दायै ॥८८॥ जगत्पालकायै ॥८९॥ कालिन्यै ॥९०॥ कौमारिन्यै ॥९१॥
कालिन्यै ॥९२॥ कान्तिप्रियायै ॥९३॥ वज्रनाशिन्यै ॥९४॥ देवक्यै ॥९५॥ आदि-
देव्यै ॥९६॥ तारिण्यै ॥९७॥ स्वाहिन्यै ॥९८॥ नैवत्यै ॥९९॥ शिवायै ॥१००॥ भुवनेश्व-
र्यै नमः सदालक्ष्म्यै ॥१॥ इतिप्रियायै ॥२॥ उदितायै ॥३॥ अनन्तरूपि-
ण्यै ॥४॥ अनन्तदायिन्यै ॥१००॥ नन्दिन्यै ॥१॥ कुलवर्धकरत्यै ॥२॥ सर्व-
पशुपालकायै ॥३॥ लक्ष्म्यै ॥ पञ्चालयायै ॥४॥ पद्मायै ॥५॥ कमला-
यै ॥६॥ सिद्धायै ॥ आदित्यप्रियायै ॥७॥ श्रीवनदुर्गालक्ष्म्यै नमः ॥ अष्टो-
त्तरनामशतकं समाप्तम् ॥ ॥ श्री ॥ ॥ ॥ श्री ॥ ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

गं॰पुगुग्गुलबोलुबमद्विषासिसितालकैः॥अगरुप्रभसैर्दिक्
तोषुपः प्रगृह्यतां॥आपः स्कन्दं तु स्निग्ध्यानि विद्धीतवसा॰॥ कृते
॥धु॰॥घृताक्तवर्तिसिं॰युक्तोमयाते कोत्तिकृतः॥दीपोयं॰गृह्य
तां॰देवि मज्ञानध्वां॰तहारि॥आरा॰पुष्करतो॥ ॥अज्ञाव
द॥दीपं॰॥नैवेद्यं॰चक्रसौपेतं॰तसत्तौ ओदनपायसं॰॥ शाखो लेह्यै
रसपानीयेनपेतं॰देवि तु ग्रह्यतां॰॥आरा॰यः करतो॰॥ यक्षि॰प्रज्ञा
वद॥नैवेद्यं॰॥ कर्पूरानुरा कलनागवल्लीदलैर्युतं॰जक्रमुतोनिसं
युक्तं ताम्बूलं॰प्रतिगृह्यतां॰॥ ताः॰आवद॰॥द्विन्देयं॰पूगदानद॥
तांबूलं॰॥नीरा॰गनालिकेरं॰रक्त॰वीतं॰करदली पीलु॰॥ रक्तरं॰ठा
न्यनेकानि गृह्याणि दधि विद्युते पनाना विषफलसमर्पणं॰॥ नेत्र
केनादि मां॰देवि विद्युद्वरस्थनालये॥नीराजनं॰मयादत्तं॰॥
स्वीकुरुष्व मदेश्वरि॥ वेकुं मं॰त्ले रसनीनाकिनं॰॥ प्रज्ञा सप्तसोपस्मृ
ने सर्वलोकैकपुत्रिते॥ नानाचामर छत्रयेदेवि गृह्यता मज्ञानवद॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

वे रो क्ष्म अ ल्प पु ष्प ं॥ अ तैत्त कृ ं त अ ध स्पा ं त क्ला ना ं व न रा ं स रा॥
वि स्तो द स्र सि प ता ँ दे वी ं न आ ं व ं दे अ नो न आ ं। दो न ग्र रा ग ं॥ न अः
क म ल कि ं म ल्क नि ता ये वि अ ला न ने। दो न तु प क्षि प ते दे दि पा दि आ ं
तु व ने स्व ने स्व ति॥ दो न न अ स्का न ं। ल स्ली ं सी न स अ त्रा ज त न या ं
सी न ं ग प्रा मे स्व नी ं। ता सी तु त सा अ दे व व नि ता ं लो के क दी पा ं कु ना ं।
सी [illegible] दे क रा क ल व प वि त्त व ब्र मे ं त्र म ं मा य ना ं ता ं ते ला। क्ष क
कु [illegible] नी ं सा न सी जा ं व ं दे अ कृ ं दे प्रि या ं॥ दो न अ प न ं॥ दे ं ज्ञा दि वि दे
थे स वैः से ं से वि त प रा ं जं कां ं। व न ल स्ली ं स्व घा रा क्लि क नि घा मि व
दे सि ग ं॥ स्व दे सि ग ं। न जो दे को म रा दे यो रि वा ये स त त ं न अः॥ ं
न अः स्व क त्ये त ज्ञा ये नि य ताः प्र ग ता स्म ता ं॥ न अ स्का न ं॥ अ नि
मा न स कं ं मा त त्त अ न। पि त वि प्र दे। वि क्ष प्रि ये प्र सं ं ज्ञा प्रीं ं सी
न स्त न न कं न्म के॥ स्व ज्ञा प्री ं। दे सि ग। पु प ता बु लं ं व स्ता लं ं का
न सं ं यु तं ं उ पा य नं ं ग जी वृ तं ं अ या दे त्त्वं ं द नि प्रि ये॥ उ पा न्नं ं
दे ं नि ना स्व ति ग ज्ञा त्रि ति प्र ति ग ज्ञां॥ उ तं ं ये द्वि प नः दे दि स व ति

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

कामांस्वरेयिओरेदि जेतवस्यायआंदपांकृतु मचीस्वनि॥रू
तिग्राघनिं।निकीनाभूतणंपर्वसिधविधापनाविति रूमांमच
कवांपुमांणसाताप्नजेरवानि॥ ॥च्यस्पस्मतोतिपुजा
सजपाति॥ ॥रूतमावनिंसांपुतिं॥ ॥कघाघ्रानंतस्थ
स्वी॥पुनाकेलासरिस्वरेसिचणंभर्वसेविते॥जण्नानविकेह
पघ्रांतस्सोंचेनानाबतिप्रते॥ननपीठेभुक्सासिनंरांकनं
लोकरांकनं॥पघ्रह्व मोनीसंत्र्मा लोकानप्रदकामचा॥
स्वीपार्क्तिवाव॥ ॥तणवहीर्वलोकेरासर्वलोकजितेननाच
रस्पंव्रतंपुंतापंतराव्रसुनमानया॥रीस्वनः॥वनलस्वीव
तंनाअस्वर्सीतापकाननाः॥व्रुतानाभ्रतमबिदंप्रलपोव
प्रवपनिं॥पतरावनता॥सर्वसीतापपंप्रदराति सा॥ ॥सी
पार्द्तिवाव॥ ॥विपिनाकेनकतीचांकरासाराचतेवता॥क
घमानासम्पितापुर्वंकस्सोकिंवावनंदर्को॥ ॥रीस्वनः॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

वत्नलक्ष्मीवृत० पु० णम० वस्त्राभिरूणा पार्वती॥ २॥ क्लेस्नावणिके
आसो पुर्णिजोपा० तता भवे॥ आप्रजे पद तजे पोजा जण्णल-
स्नान भावनेतु॥ स्त्रीति वृचिन्न खे वा चिकतेस० पुक न० स्त्रियः
पञ्चासने पञ्चकने सर्व लौके कपुजिते॥ नानायणा व्रिये दे वि
रूपीता जम सर्वदा॥ ज० लेणानेनस्नकले उपवाने प्रपु क ये त्
उ पायन० वदातक० सनानुल० सरसिणा०॥ नवसूत० कने पना दव
वाश्वसभावनेतु॥ ४ वभावनिते लक्ष्मीः श्री शि ति० दास्पतिपुव०।
पार्वत्यावाव॥ ॥देव देव जग० नाथा जदे स्वनक गलुजो॥ पुर्वी
कसे वन० दत० ४ व० पुजितचारिया॥ ॥ह्रीस्वनः॥ ॥क्रं
डिन० नाजनगन० सर्वमङ्गल ज० डित०॥ दे अन्नाकान स० ज कं
वाभीकरन रूपो कुज०॥ ततातु ब्राह्मणीकाविनु वा उजतीति वि
रूपा०॥ कलावती सावित्रीसतत० ज० कृताविणी॥ तस्पल
रुणा स० ज क्ताच्याः लक्ष्मीः स्वभगता वदेतु॥ ४ दि कल्याणित
उ० ते वत्नलक्ष्मीः समागता॥ वाउमलुवाव॥ ।किमवभाग

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

तारेविपीठेस्मिञ्जपवेरपता॰॥ नदं॰ते किं॰ श्रियं॰ कर्यः॰ पत्न
दिकाचार्यं किमस्तिसे॥ ॥वनलक्ष्मवाच॥ ॥त्वं॰ पुं॰ताम
लकपोर्यक्ला व॰ज वि॰ वनितानने॥ नत्तो जास्ते कुर्वा मां॰ तेनात्ते
क्रां॰ ततमादिनि॥ अनपकातब तद्यावन॰ तस्पाभिका॰ स्ति॰
॥ततराज्ञाना
त्रअतीक्तीपना॰ विश्लुल्लता॰॥ कला॰ कलिप हतुलाइतप
वृक्षवारद॥ ॥वात्रअतवाच॥ ॥ननस्तेसर्वकलोका
ना॰ कनन्धेपं॰ताप स्तुतये॥ रान॰ ताथेतिक गव॰ थे विश्लुवक
साधनालये॥ नत्क पां॰ लोकितोयस्तुसपनाः सगताप-
मांनृ॥ सवला याः सकुहुं॰ वीव सस्तेनः सवपं॰ डितः॥ कन्मां
ततसद स्वेभकिअचारा कतं॰ कतं॥ यतस्तात्तपाद्गणनं
पस्याभिदनिवल्लते॥ ततस्तस्मै अयालक्ष्मीवनं॰ रलातिनो

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

रुपे॥ अथ वाग्भवमतीभ्ं॰गामा ख्वाम्नाऽ घ्नाय सं॰त्रमात्॥ तद्दर्दि
कथयामास संपू॰र्णा॰पुनतस्तदा॥ खुलाते कां॰धवाः सर्वस्यापु
सावितिवाब्रुवं॰न्वृ॥ तथैव कनवाभेति तनगमनकां॰द्धिणाः
ताभ्यो दत्ता॥ सं॰स्त्राद्ये वरलक्ष्मी देवैतदा॥ स्त्रियः प्रसं॰नहृदयाः
वकुः स्त्रीव्रतजनजं॰॥ नुतनेतं॰कुलेषुस्तिकिं॰ते सवदृवल्लवान
धाययतत्तसोव्रतीं॰व्रतिमां॰वक्षदेवाज्ञिता॰॥ पञ्चासनेव अकेवे
सर्वलोकैकपुजिते॥ नानायणाप्रिये देविस्नीततवसर्वदा॥
मं॰त्रेणानेनसकलान्पवान्वयपाक्रमात्॥ कलान्दक्षिणा
दस्तेनवस्तुलं॰दधः स्त्रियः॥ ततो देवी समजीचेत् यविंधांवकु
क नं॰गनाः॥ ततो दे
नसादेनमुक्तामणिविभुविनाः॥ जन्मदानपना नित्यं॰बं॰धुको-
वगणतत्पराः॥ स्वं॰स्वं॰सदनसमाक्रम्य र्दस्यादवनचसं॰कुल॰
जनो नाकधयामासतन्मिं॰त्र्यात्स्तु विस्मिताः॥ वदसं॰वा
ग्भवतीपूणाना सर्वाः प्रांतजनोनधा॥ एवं॰क्षिपतावाग्भवती
नित्यान्तुविताज्यवतीदिन॰॥ वरलक्ष्मीप्रसादेनसम्पदतती-

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ले

ला बा०पका॥ तु ह्मात विष्णानृतो गा न०तेलेते १२०१ ह्य॥ वृति दे
वस्ताताअथो कैलासे पत्र अे रवत्र॥ गो नि देवो बत्ता वेतगू वरल
स्त्री व्रतो तृस०॥ ५चत्र ३०द्ध (७) या ह्नितम० सा व ये द्वास
मा दितः॥ का के सि०१ तत्र वधि० ललतते सी पदात्र तः॥ ५व्रति
सीदअ९ नातोऽ माजये रवत्र स० वाऽे क नल स्त्री व्रत क चारा
व्रता०॥ स० ३ता०॥ ॥स्त्री कृष्णार्पण मस्तु॥ स्त्री॥ ॥स्त्री॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

सी न तो रा य न्न नः॥ ५०० ॥ न रा सी न स घ्र ना रा ध्या स्तो न

नं० त स्या। वि प्र ल र त्रिः। अ नु स कु ० रः। सी अ स घ्र ना रा य गो

दे व ता न न न नो जी स स्व ध घे रु ये वि ति अ नः॥ ३ स्तो वा

चा। अ घ स्था नं० त व रुम भि न। वी जी स च्छ ल च २०॥ ७ न का

मा [illegible] ते व ये वे त व ।ति० कु गे ति नं०॥ रा न स्व बी रु गो० का

न० व न रा त अ या ।ति नं०॥ रा० रु त क्र य न० दे व० पी नं व

रा क्य भा [illegible] नं०॥ अ त य० व न र० रा० न० स तु मे हं कु या नि

ति०॥ [illegible] बी गा स भा यु कु० वि० त ये तु तु यो त न०॥

प व० स्था ला द ने नि त र० प: त सु० ओ स तु विता०॥ क का

य र क्रिता स द्य० स वं का न च ल च २०। दे वा वा

ये न क कै स्तु न अ तै रा ति र ध तो॥ कु

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

न ग्र कैः वी ठि ता मा श ख ग्रा यन मोन शः।।नीला।०
कन गि ठि० वा पा न वि ञ त्रो म का ब लः।। क ते ञ नु व
नु वे स्मि० नु॥ व रु ता क्ता य ते न शः।। ना न इ नु वा वा।।।।
कमा वा स्रो न ठो श ण्णिः व वी नु।। का मा न वा नु या नु।।
व वे वै वा नु कं० वै व त नो श नु कि वि ता श द।।। ।।९
वि ता न द नु वा वा।। ।।। नु नु मा न इ त व रु० नु ३।८
न वी ता क० न नु०।। न इ कि ण्ण क नु० न त्न न ना ण्णि०
रय वं का श ३०।। ठा त ध्र इ कि नो नु इः न वि त्रि मो वि

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ष्णु नारि वितनः॥ ब्रह्मा वी ऋ न त स्त स्याद्भवैरिं॰ नादि देवताः॥
स्कं॰ यो व स्कं॰ य व त्रैष्टुविरा वो रुष्ट्र स्य स्त्र श॥ गुला॰
कैन प देरा रव्या वे दा व्य क्रा र्ण शार्स्मताः॥
मरी नाश रसाम ना प्राः॰ ष्ट्रवी दि क श रपुं॰
स्त्रि॰ ः॥ लोकयश॰ रव शारितना श
रव ॰ रवे व येदु नः॥ ज नाम रत मि
त॰ ॰ ताः॰ रवा न श यु ना रणा॰ ब्रि न॰
प्रति श्लुत.प्रति ज्ञा॰ वा अ रवयः॰ रणेन

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ऐडु नः॥ ख० गी ते फलितः स्नैव रणीत
ळ रख व न रणप तै॥ वाशासाथन न तेवि०
थ्या है द्रि काज्ञुज्ञि क० वृतः॥ व त देनशसा
वरः स्व विदा व लविज्ञ वे॥ बोपित त्वाय
है ना ञा आ रखह्या य न शेन भः॥ ख्य
खञ्च य रक्षात्त व पिवउत्ता जामाता
य्य मा वित ज्ञति रथर्वकालः॥ आनारु
वि ब० स्तातः तुण्णा० वि० दो रिल्गा
तिज्ञवि नातरा को रिण॥ डी तेरख०

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

व थे नै क थे ना स्त्री ख्या० ज्ञि भे व गे॥ रण
ने म ते न व कैं दु शा श प स्ती नि रणे खो
ता०॥ प का द रो। ि श्री ज डा णा० व ग्गु गा
श श्रा ज व्र व्र धा॥ ना गा ष छा िरेष दे गं
ना० [illegible] आ ना। ओ िरग िवक्षा लः॥ आ त्रि
न जं [illegible] मी न जी विं दे न कृ ख्र आ प ति ः। ख्रि
न० णा न जि र न्ती न जी ष द्रु न जि नि श्रो। रन्न
से॥ श्रु उ र्व नि ल० ष ।री व ई ः व क्षा ः प

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

అస్య శ్రీ [illegible] త్రిష్టుప్ ఛందః । [illegible]
[illegible] । [illegible]
దా । ఇతి [illegible] అథ ధ్యానమ్ ॥ శంఖచక్రగదా[illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] । [illegible]
ఓం [illegible] ౬౪

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri